INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

समकालीन भारतीय दर्शन में मूल्य सौन्दर्य

Dr. Rajesh Kumar Ratnakar
Assistant professor
Deptt. of Philosophy
Gopeshwar college, Hathwa
J.P.university, chapara

मानव मूल्य का आशय वैसे मूल्यों से है जो मानव की सोच, व्यवहार एवं कार्य का मार्गदर्शन कर जीवन को परिष्कृत, गरिमापूर्ण एवं सार्थक बनाते हैं। मनुष्य भय, मैथुन, आहार आदि में पशु के समान है, परंतु मूल्यों के कारण वह मानव कहलाने का अधिकारी बन जाता है। वर्तमान में जीवन के प्रत्येक स्तर एवं प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का ह्रास हो रह है। आज समाज के रोल–मॉडल बदल रहे है। भ्रष्ट आचरण में लिप्त, धन–बल संपन्न लोग आज सार्वजनिक मंचों पर सम्मान पा रहें है। इन सबका गलत संदेश नई पीढ़ी पर जा रहा है। जिसका दुष्परिणाम समाज और राष्ट्र के साथ–साथ सामान्य जन को भुगतना पड़ रहा है। आज एक सामान्य आदमी की धारणा है कि मेहनतकश लोगों का शोषण हो रह है व झूठ और फरेब का बोलबाला है और इसी कारण जनसाधारण के जीवन में नैतिक, सामाजिक एवं आध्याात्मिक मूल्यों के प्रति आस्था घट रही है। आज मूल्य संकट की स्थिति उभरकर सामने आ रही है। मूल्य संकट के बारे में डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का यह कथन सही प्रतीत होता है कि– ''हम यह जानते हैं कि सही क्या है, हम उसकी सराहना करते हैं लेकिन उसे अपनाते नहीं है। हम यह भी जानते हैं कि बुरा क्या हैं, हम उसकी भर्त्सना भी करते हैं फिर भी उसी के पीछे भागते हैं।''[1]

नीतिशास्त्रीय संदर्भ में मूल्य का आशय भौतिक मूल्य या परिमाणात्मक मूल्य से न होकर जीवन के गुणात्मक पक्ष से संबंधित मूल्यों से होता है। मनुष्य केवल पशु के समान जीना नहीं चाहता बल्कि अच्छी तरह एवं गरिमापूर्ण तरीके से जीना चाहता है। इसके लिए जीवन का मूल्यपूर्ण होना आवश्यक है। मूल्यपूर्ण जीवन ही अर्थपूर्ण जीवन है। जीवन स्वयं अपने आप में शुभ नहीं है, बल्कि इसे प्रयासपूर्वक बनाना पड़ता है। इसमें मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। मनुष्य अपने जीवन में उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को निर्धारित करता है। इस लक्ष्य प्राप्ति में जो आदर्श रूप में सहायक होते है, वहीं मूल्य है।[2]

भारतीय दर्शन में मूल्यों को पुरूषार्थ कहा गया है। ये पुरूषार्थ भारतीय विचारकों के द्वारा चार निर्धारित किए गये हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें से प्रथम तीन को साधन मूल्यों या परतः मूल्यों के रूप में स्वीकार किया गया है और केवल चतुर्थ को अन्तिम रूप से साध्य मूल्य या स्वतः मूल्य के रूप में प्रतिपादित किया गया है। अवान्तर रूप से

यों तो कई बार अर्थ और काम को साधन मूल्य और धर्म को साध्य मूल्य भी कहा गया है। परन्तु अन्तिम दृष्टिकोण यही है कि मोक्ष ही वस्तुतः परम साध्य है, परम मूल्य है, परम पुरूषार्थ है। भारतीय दार्शनिकों का कथन है कि सत्यम, शिवम एवं सुन्दरम् परमब्रह्म की ही विविध अभिव्यक्ति है। विचारणीय बात यह है कि जब यह कहा जाता है कि सत्य, शिव और सौन्दर्य स्वतः मूल्य है क्योंकि वे स्वयं ही हमें संतोष प्रदान करते हैं, इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि वस्तुतः संतोष, शांति या सुख ही हमारे जीवन का साध्य है, लक्ष्य है। हम सत्य, शिव एवं सौन्दर्य को भी इसिलिए चाहते हैं कि उसकी प्राप्ति में हमें सुख एवं शांति कि अनुभूति होती है। यहां यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या हमारी यह चाह क्षणिक एवं शांत सुख की है या शाश्वत एवं अनन्त सुख की। भारतीय मनीषी कहते हैं कि मनोविश्लेषण के आधार पर यह एक ध्रुव सत्य निश्चित होता है कि विश्व का कोई भी प्राणी क्षण भर के लिए दुखी या अशांति नहीं रहना चाहता। दूसरे शब्दों मे हम यह कह सकते हैं कि विश्व के सभी प्राणी सदा सर्वदा एक ऐसे सुख या शांति कि खोज में है जिसका कभी अवसान न हो। अस्तु यह सिद्ध होता है कि संसार के सभी व्यक्ति का सर्वोपरी या अन्तिम उद्देश्य है शाश्वत सुख एवं आनन्द की प्राप्ति। इसी शाश्वत सुख एवं शांति को मोक्ष की संज्ञा दी जाती है। मोक्ष प्राप्ति ब्रह्मसाक्षात या आत्म साक्षात् का ही प्रतिफल है जिसमें सत्य, शिव और सौन्दर्य तीनों का पूर्ण समन्वय समाहित है। ध्यातव्य है कि पाश्चात्य दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित जीवन के उच्चतर मूल्यों की पृष्टभूमि में भारतीय दर्शन द्वारा स्थापित परम मूल्य की ही खोज छिपी है। पाश्चात्य दार्शनिकों का अन्वेषण केवल उच्चतर मूल्यों तक ही सीमित रहा परम मूल्य या उच्चतर मूल्य की चेतना उन्हें कभी न हो पायी।[3]

इक्कीसवीं सदी में मूल्यपरक जीवन का साधन केवल धर्म नहीं अपितु तार्किक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक तीनों होना आवश्यक है। वही धार्मिक कृत्य प्रासंगिक एवं स्वीकार्य है जो विज्ञान सम्मत हो। सामान्यतः मनुष्य को शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक आनन्द जीवन में एक साथ नहीं प्राप्त होते हैं। जब तीनों स्तर के आनन्द की प्राप्ति एक साथ होता है, तब समकालीन भारतीय चिन्तक के दृष्टि में मूल्यपरक जीवन की स्थिति उभरती है। ध्यातव्य है कि समकालीन भारतीय चिन्तकों ने जीवन का लक्ष्य स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति को नहीं अपितु मानवकल्याण स्वीकार करते हैं।

विवेकानंद के मूल्यबोध की अवधारणा उनके व्यवहारिक वेदान्त, धर्म और मानववाद की संकल्पना में देखा जा सकता है। सामान्य लोगों में यह धारणा प्रचलित है कि वेदान्त ऐसा जटिल अथवा रहस्यपूर्ण विषय है जो केवल बुद्धिवादियों के तर्क वितर्क तक ही सीमित है और साधारण मानवीय बुद्धि के लिए अगम्य है। दैनिक कर्मजीवन के पहलुओं

के साथ वेदान्त के सिद्धांतों का कुछ भी सबंध नहीं है इसलिए व्यवहारिक जीवन में इसका कोई महत्व नहीं है परन्तु विवेकानन्द ने वेदान्त की व्यवहारिक व्याख्या करके इसे आम जन–मानस के स्तर पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया, वेदान्त में अंतर्निहित गूढ सिंद्धांतों को सरल एवं सुग्राह्य रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करके स्वामी विवेकानंद ने स्पष्ट कर दिया कि किस प्रकार वेदान्त हमारे मूल्यपूर्ण जीवन का आधार बन सकता है।

सेवा को वे सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भगवान का सबसे प्यारा रूप **'दरिद्र नारायण'** है। जब हम दरिद्र को नारायण मानकर उसकी सेवा और सहायता करेंगे तभी हमारी आत्मा का शुद्धिकरण होगा तब हम ईश्वर–साक्षात्कार के योग्य हो जायेंगे। अतः **गरीबों, असहायों एवं पीड़ित मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। यही ईश्वर की प्राप्ति का साधन है** और यह योग, ज्ञान, भक्ति, ध्यान आदि के समान ही पवित्र साधन है। मानवमात्र की सेवा एवं उनका सम्मान ही नैतिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्थान की कुंजी है।[4] इस प्रकार विवेकानंद ने मानवतावाद को आध्यात्मिक आधार पर प्रतिष्ठित और प्रसारित करने का प्रयास किया।

स्वामी विवेकानंद ने सभी धर्मों के औचित्य और उनकी स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार किया। उनके अनुसार सभी धर्मों का केन्द्र बिंदु ईश्वर है और हमसे प्रत्येक उसकी प्राप्ति हेतु किसी एक रास्ते पर चल रहे हैं धर्म के वाह्य स्वरूप में भिन्नता है परन्तु सबका आंतरिक उदेश्य मानव–कल्याण है। ऐसी स्थिति में मनुष्य, मनुष्य के बीच प्रेम और सेवा का ही संबंध हो सकता है। परन्तु वे घृणा, धार्मिक आडम्बर, धार्मिक रूढ़िवादिताओं, हठधर्मिता और कट्टरता के विरोधी थे। यदि सभी मनुष्यों को एक ही धर्म, उपासना की एक ही सार्वजनीन पद्धति और नैतिकता के एक ही आदर्श को स्वीकार करने के लिये प्रेरित या विवश किया जाए तो संसार के लिए यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी। इससे धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति पर आघात पहुंचेगा। अतः अच्छे या बुरे उपायों द्वारा दूसरों के अपने धर्म, मान्यताओं एवं आदर्शों को दूसरों के ऊपर लागू करने का प्रयास न किया जाए।

समकालीन भारतीय दर्शन में मूल्य सौन्दर्य का सारतत्व महात्मा गांधी के दर्शन में अन्तर्निहित है। महात्मा गांधी के अनुसार आनन्द का बोध शांति से संभव है। उनके अनुसार जीवन का लक्ष्य भौतिक सुख कदापि नहीं हो सकता है, क्योंकि भौतिक सुख तृष्णा को जन्म देती है, और तृष्णा के कारण कभी भी वास्तविक सुख का बोध नहीं हो सकता है। अतः मूल्यपरक जीवन शांति में अन्तर्निहित है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि गांधी का उपर्युक्त चिंतन निषेधमूलक नहीं है अर्थात् महात्मा गांधी ने इन्द्रिय सुख

का निषेध नहीं किया है। वस्तुतः गांधी के दर्शन पर श्रीमद्भगवद्गीता का प्रभाव परिलक्षित होता है। गीता में कहा गया है कि ''आत्मन्ये ब्राह्मनः तुष्टः''[5] अर्थात् मनुष्य को स्वयं में संतुष्ट रहना चाहिए। अतएव गांधी जी कहते हैं कि संतोष में शांति और शांति ही जीवन का परममूल्य है। इसकी प्राप्ति के लिए वे आत्मानुशासन पर बल देते है। आत्मानुशासन से सह नैतिक मूल्यों का संरक्षण होता है, और सदाचारमूलक जीवन ही मूल्यपरक जीवन है बन जाती है।

समकालीन दर्शन में रजनीश का नाम विशेष रूप से लिया जाता है क्योंकि वे धर्मशास्त्र, तंत्र–शास्त्र, आधुनिक विज्ञान तथा मनोविज्ञान की गहराई में जाकर आध्यात्मिक जीवन के लिए एक सहज मार्ग का अन्वेषण करते हैं। रजनीश का मानना है कि संसार कि रचना में, रचनात्मक प्रवृत्ति में तथा मनुष्य के क्रिया–कलापों में प्रेमतत्व को स्पष्टतः देखा जा सकता है। मूल्य का मूल स्त्रोत वे प्रेम को मानते हैं। वस्तुतः समकालीन भारतीय दर्शन प्रेम को ही जीवन का आधारतत्व मानता है। व्यापक अर्थ में प्रेम का तात्पर्य मनुष्य वनस्पति, पशु तथा भूत जगत से अभेदमूलकभाव सृजन से है। मनुष्य कि दृष्टि जब उदार होती है और सम्पूर्ण संसार को प्रेममय मानने लगती है तब मूल्यपूर्ण जीवन का प्रारंभ होता है।

डी0पी0 चट्टोपाध्याय वैज्ञानिक भौतिकवाद के समर्थक हैं। उनका भौतिकवाद वैज्ञानिक दृष्टि से अनुप्राणित रहने के कारण अत्यंत ही बैद्धिक माना जाता है। उनका मूल्य संबन्धी संकल्पना मिथक, परंपरा अथवा आप्त वचन पर आधारित नहीं है। वस्तुतः वे तर्क और बुद्धि के आधार पर मानवीय जीवन में मूल्य की स्थापना का प्रस्तावना करते हैं। उनके दृष्टिकोण में मूल्य या मूल्यवाद कोई ईश्वरीय या अलौकिक अवधारणा नहीं है बल्कि यह सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों और मानव श्रम की उपज है। वस्तुतः उनके दृष्टि में मूल्यवाद का अर्थ मानवतावाद है। उनका वैज्ञानिक भौतिकवाद मूल्यों को रहस्यवाद और आध्यात्मवाद से निकालकर विज्ञान, इतिहास और समाजशास्त्र के धरातल खड़ा करता है। वे कहते हैं मूल्य वह नहीं जो हमें संसार से विमुख करें, बल्कि मूल्य वह है जो हमें संसार को समझने और बदलने की शक्ति दें।

इन समकालीन दार्शनिकों के मूल्य सौन्दर्य दृष्टिकोण के साथ ही शैक्षणिक जीवन में मानवीय मूल्यों के प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार द्वारा गठित विभिन्न आयोगों के सुझाव के सुझाव भी अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। 1948–49 में डॉ. राधाकृष्णनन् की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन हुआ। इनकी भी यह राय थी कि प्रार्थना सभाओं, विभिन्न धर्मों के साहित्य व दर्शन का ज्ञान कराया जाये। आयोग द्वारा दिये गये यह सुझाव अप्रत्यक्ष रूप से मूल्य शिक्षा देने पर बल देते है। फिर 1959 में डॉ. श्री प्रकाश की

अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ जिसे धार्मिक व नैतिक शिक्षा समिति कहा गया। इन्होंने भी युवाओं में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्य विकसित में वाद–विवादों, स्वतंत्र चिंतन एवं आलोचनात्मक चिंतन के गुणों का विकास किरने का सिफारिश किये। 1964–66 कोठारी शिक्षा आयोग का गठन हुआ व आयोग ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा के द्वारा छात्रों में सामाजिक उतरदायित्व की भावना का विकास किया जाना चाहिए और छात्रों को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण रख सके। आयोग ने यह भी कहा कि आज के युवकों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों के प्रति जो अवहेलनात्मक दृष्टिकोण है, उसके कारण ही सामाजिक व नैतिक संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं इसी कारण हमारे लिए यह आवष्यक है कि हम शिक्षा व्यवस्था को मूल्य परक बनायें। 1985–86 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मूल्य चर्चा के संबंध में तीन बातें कही गयी है जो इस प्रकार है–1. मूल्यों (सामाजिक व नैतिक) के विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाये जिससे वह इन मूल्यों का विकास करने का सशक्त साधन बन सके। 2. शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास किया जाये जिससे वह धार्मिक, कट्टरता, हिंसा, अंधविश्वासों का दमन करें। 3. मूल्य शिक्षा हेतु ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाये जो मूल्यों का सकारात्मक विकास करे। इसमें राष्ट्रीय विरासत व राष्ट्रीय लक्ष्यों पर बल दिया जाये।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि समकालीन भारतीय दर्शन में मूल्य संबन्धी आदर्शों का पर्याप्त स्थान दिया गया है। वैदिक परंपरा द्वारा स्थापित शाश्वत् एवं आध्यात्मिक मूल्य सत्यम, शिवम् सुन्दरम् के आधार पर ही समकालीन दार्शनिकों एवं आयोगों ने अपने मूल्य संबंधी दर्शन को प्रस्तुत किए हैं।

संदर्भ सूची :

1. डॉ0 राधाकृष्णन, भारतीय संस्कृति, प्रकाशकःराजपाल एण्ड सन्स, संस्करण 2016, पृ0सं0 71–72
2. कुमार, धर्मेन्द्र, प्रशासकीय नीतिशास्त्र, च्यवन प्रकाशन, जयपुर, पृ0सं0 18
3. अग्रवाल, ब्रह्मस्वरूप, पाश्चात्य दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृ0 सं0, 280
4. दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लाकभारती प्रकाशन, इलहाबाद, पृ0सं0 431
5. गीता 2/55

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM